हिंदी वार्तालाप कार्यशाला का आयोजन

2 दिसंबर 2016 को रेडब्रिज एडल्ट इंस्टीच्युट की लैंग्वेज काउंसलर श्रीमती इंदु बारौठ ने रेडब्रिज इंस्टीच्युट] लंदन में हिंदी वार्तालाप कार्यशाला का आयोजन किया। उद्देश्य था कि विदेशी परिवेश में किस प्रकार घरों में बच्चों को हिंदी बातचीत करना सिखाया जाए] किस प्रकार उन्हें भारतीय संस्कृति से जोड़े रखा जाए और किस प्रकार हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार- प्रसार हो। इस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती बारौठ ने किया। इस अवसर पर रेडब्रिज एडल्ट इंस्टीच्युट की प्राध्यापिका जॉनी कनीगंहेम सुरेखा चोपला(हिन्दी समिति) श्री तरूण कुमार(भारत का उच्चायोग, लंदन, के हिन्दी अधिकारी) शिखा वार्ष्णेय (लेखिका, पत्रकार) अश्विनी किनहिकर(लाइका-दिल से) मौजूद थे।

कार्यक्रम के आरंभ में भारत का उच्चायोग, लंदन के हिंदी अधिकारी श्री तरुण कुमार ने हिन्दी भाषा के विकास और नई दिशा के बारे में बताया। दुनिया के किसी भी हिस्से में अपनी पहचान को बनाए रखने के लिए अपनी भाषा और संस्कृति को बचाए रखना कितना महत्वपूर्ण है, इस बात पर बल देते हुए उन्होंने बताया कि आनेवाली पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से जोड़े रखने के लिए बच्चों को हिंदी की शिक्षा देना काफी अहम है। वैश्वीकरण के दौर में दुनिया की छह हजार भाषाओं में से लगभग ढाई हजार भाषाएं लुप्त हो गई हैं। किसी भी भाषा की मौत केवल भाषा की मृत्यु नहीं होती है बल्कि उसमें रचे गए साहित्य, लोक साहित्य, विज्ञान और तमाम सांस्कृतिक विरासत की भी समाप्ति होती है जो उसमें हजारों वर्षों में विकसित हुई हैं। इसलिए अपनी भाषा को जीवित रखना महत्वपूर्ण है। हिंदी के लिए अभी यह खतरा नहीं है फिर भी इसके प्रचार प्रसार की हर संभव कोशिश की जानी चाहिए। सुरेखा जी ने इसे आगे बढ़ाते हुए बताया कि दैनिक जीवन में कैसे दिलचस्प तरीक़े अपनाकर बच्चों को इससे जोड़े रख सकते हैं। वहीं शिखा जी ने अपनी बातों से श्रोताओं को बाँधे रखकर हिन्दी के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि हिन्दी एक भाषा ही नहीं अपितु साहित्य-कला का दर्पण है। अश्विनी ने बताया कि हिन्दी कैसे हमारे व्यक्तित्व में झलकती है। दूर देश में जब कोई दो अनजान व्यक्ति मिलते हैं और उन्हें यह पता चलता है वे समान भाषा भाषी हैं तो उन्हें मिलकर अजीब खुशी होती है। स्वयं ही एक अपनत्व विकसित हो जाता है। इस प्रकार विदेशों मंे हिंदी आपसी रिश्ते को मजबूत करने का माध्यम बन जाती है। जॉनी ने भी अपने विचार रखते हुए कहा कि हिन्दी भाषा एक-दूसरे को आपस में जोड़ने का बहुत अच्छा माध्यम है। कार्यक्रम का समापन करते हुए इन्दु ने बताया मातृभाषा स्वयं के व्यक्तित्व का दर्पण होती है, जिसमें हम अपने विचारों , कथनों तथा व्यवहार को खुलकर प्रदर्शित करतें हैं।

उपस्थित श्रोताओं ने सभी अतिथि वक्ताओं की बातों पर करतल ध्वनि से अपनी प्रतिक्रिया दी। श्रोतागण भी अपनी मातृभाषा के प्रति जागरुकता देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

कार्यशाला का समापन जलपान और आपसी चर्चा के साथ हुआ।